राजनीतिक-आर्थिक संकट के बीच बिलावल का दौरा

जी. पार्थसारथी

गोवा में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन के विदेश मंत्रियों के शिखर सम्मेलन में भाग लेने हेतु बिलावल भुट्टो ज़रदारी का आना उस लीक से हटना है, जिसमें पाक बैठकों में वर्चुअल माध्यमों से भागीदारी करता आया है। आशा है कि बिलावल भारत से संवाद में भुट्टो परिवार के नक्शे-कदम पर संतुलित-परिपक्व व्यवहार का अनुसरण करेंगे।

पाकिस्तान के युवा विदेशमंत्री बिलावल भुट्टो को विरासत में जहां राजसी ठाठ-बाठ मिला है वहीं वंशानुगत विवाद भी। उनके नाना जुल्फिकार अली भुट्टो, जो कभी एक राष्ट्रीय नायक और राजनेता बनकर उभरे थे, भी अपनी जवानी में गर्म-ख्याल थे और भारत के विरुद्ध विषैली बयानबाजी करते रहते थे। जुल्फिकार भुट्टो की राजनीतिक महत्वाकांक्षा के चलते अविभाजित पाकिस्तान दोफाड़ हो गया था, क्योंकि वे 1971 के आम चुनाव में मिले जनादेश को स्वीकार करने से मुकर गए थे, जिसमें उनकी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी को भले ही पश्चिम पाकिस्तान में बहुमत मिला था, लेकिन मुल्क के दोनों हिस्सों की संयुक्त संसद में बहुमत कुल मिलाकर शेख मुजीब-उर-रहमान के हिस्से आया था। इसके बाद पंजाबियों के दबदबे वाली पाकिस्तानी सेना ने देश के पूरबी हिस्से में कत्लो-गारत मचा दी। बांग्लादेश के स्वाधीनता सेनानियों के कड़े प्रतिरोध और भारत के सैन्य हस्तक्षेप ने जिन्ना के उस सपने का अंत कर डाला, जिसमें वे पाकिस्तान को भौगोलिक रूप से बंटा किंतु राजनीतिक रूप से एक मुल्क देखना चाहते थे।

बांग्लादेश की चोट खाने के बाद, भुट्टो ने पहले देश की बागडोर बतौर राष्ट्रपति संभाली और फिर राष्ट्रीय चुनाव में बहुमत हासिल करके प्रधानमंत्री बन गए। लेकिन कट्टरवादी सोच के मालिक जनरल जिआ-उल-हक ने मनमाने और अस्वाभाविक रूप में उनका तख्तापलट कर उन्हें जेल में डाल दिया और एक पुराने मामले को आधार बनाकर चलाए मुकदमे में उन्हें सूली पर चढ़वा दिया। हालांकि, 1971 की लड़ाई के बाद भुट्टो यथार्थवादी बन गए थे और तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के साथ शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। उनकी फांसी के बाद पुत्री बेनज़ीर भुट्टो ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की कमान संभाली और कट्टरवादी जनरल जिया की मौत के बाद हुए चुनाव में जीत हासिल कर प्रधानमंत्री बनीं। लेकिन सेना ने उनका भी तख्तापलट कर डाला। आगे चलकर, एक राजनीतिक रैली में रहस्यमय स्थितियों में, उनकी हत्या हुई।

बिलावल भुट्टो के पिता आसिफ अली ज़रदारी, एक बड़े जागीरदार और राजसी घराने से हैं। वे 2008-13 तक राजनीतिक जोड़-तोड़ से पाकिस्तान के राष्ट्रपति भी रहे। इन दिनों पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के मुखिया

हैं। पाकिस्तान के सबसे ज्यादा आबादी वाले सूबे पंजाब में राजनीतिक नेतृत्व फिलहाल दो सबसे बड़ी राष्ट्रीय पार्टियों में बंटा हुआ है। एक है, दिनो-दिन लोकप्रिय होते इमरान खान की तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी और दूसरी है नवाज़ शरीफ के नेतृत्व वाली मुस्लिम लीग। पाकिस्तान में अनेकानेक मुकदमे झेल रहे नवाज़ शरीफ इन दिनों लंदन में स्व-निर्वासित और सुरक्षित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। फिलहाल राष्ट्रीय सरकार उनके अनुज शाहबाज़ शरीफ़ बतौर प्रधानमंत्री चला रहे हैं और पार्टी का कामकाज बेटी मरियम शरीफ़। समयापूर्व आम चुनाव करवाने को बजिद हुए इमरान खान ने पंजाब और पश्तूनों की बहुलता वाली खैबर पख्तूनख्वा विधानसभाओं को भंग करवा डाला है। इस बीच, पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश उमर अता बंदल भी संसद को तुरंत भंग करके आम चुनाव करवाकर नया जनादेश पाने के इमरान खान के प्रयासों का साथ देते दिखाई दे रहे हैं। हालांकि जनता का शाहबाज़ शरीफ सरकार और न्यायपालिका से मोहभंग हुआ पड़ा है।

पाकिस्तान संसद के सभापति राजा परवेज़ अशरफ भी इस झगड़े में कूद पड़े हैं जब उन्होंने 26 अप्रैल को मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखकर, उच्च न्यायपालिका को लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई संसद के अधिकार क्षेत्र में घुसपैठ न करने की नसीहत दे डाली। पाकिस्तान में राजकीय शक्ति का सबसे महत्वपूर्ण अवयव यानी पाकिस्तानी सेना फिलहाल जनरल असीम मुनीर के नेतृत्व तले है, जिन्हें इमरान खान के प्रधानमंत्री काल में मुश्किल हालात का सामना करना पड़ा था, जब उन्हें मनमाने ढंग से हटाकर इमरान खान ने अपने वफादार को आईएसआई मुखिया बना दिया था। वैसे, जनरल मुनीर पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल बाजवा के शागिर्द हैं। आगे चलकर इमरान खान और जनरल बाजवा की आपस में खड़क गई थी। कहा जाता है कि इमरान खान को सत्ता से हटाने का काम सिरे चढ़ाने में जनरल बाजवा की भूमिका अहम रही। जनरल बाजवा ने भारत से संबंध सुधारने के प्रयासों का नेतृत्व किया, जिसमें पर्दे के पीछे भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से चली बातचीत वाला अध्याय भी शामिल है।

इस बीच, पाकिस्तान ने अपने हवाई अड्डों का इस्तेमाल, यूक्रेन तक नाटो तक हथियार पहुंचाए जाने के लिए मंजूर किया। यूक्रेन को बरास्ता पाकिस्तान हथियार और सैन्य उपकरण पहुंचाए जाते देख रूस भड़क गया और उसने रियायती दरों पर तेल देने से मना कर दिया, जिसकी पाकिस्तान को फिलहाल बेतरह जरूरत है। लेकिन यह भी जगजाहिर है कि रूस के मौजूदा सबसे घनिष्ठ मित्र चीन ने पाकिस्तान को तेल आपूर्ति पर यह रूसी फैसला दबाव डालकर बदलवा लिया, जिसके पीछे मकसद था, अपने 'सदाबहार दोस्त' पाकिस्तान की ठोस मदद करना। इस बीच, जब रूस को यूक्रेन पर सैन्य चढ़ाई के बाद अंतर्राष्ट्रीय मामलों में चीन की सहायता की बेतरह जरूरत है, चीन ने यूक्रेन में शांति बहाली हेतु मध्यस्थता के लिए राजी होकर अब अपना वैश्विक रुतबा बढ़ा लिया है। भारत को लगभग कंगाल हुए पड़े पाक से बरतने में इस घटनाक्रम का सावधानीपूर्वक आकलन करना होगा।

आज पाकिस्तान के लिए दो जून की रोटी निकालना मुश्किल हुआ पड़ा है क्योंकि अमेरिका, विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, मदद के लिए थैली ढीली करने से पहले, उससे कड़ी किफायत बरतने के अलावा आर्थिक नीतियों में बदलाव चाहते हैं। इस सबके बीच, सऊदी अरब के युवराज सलमान ने हाल ही में, सुल्तान की मंजूरी के बाद, राजधानी रियाद में नवाज़ शरीफ की मेजबानी की है। दरअसल, सऊदी राजघराने को इमरान खान खास पसंद नहीं हैं। इन तमाम हालात में, प्रधानमंत्री शाहबाज़ शरीफ की सरकार समय पूर्व चुनाव करवाने से कतरा रही है और समय निकाल रही है ताकि इमरान खान की सत्ता में वापसी रोकने के लिए कोई बाहरी मदद मिल सके। इमरान खान भारत के प्रति मित्रतापूर्ण विचार नहीं रखते। उनकी यह सोच क्रिकेटर रहने वाले समय से ही है।

बिलावल भुट्टो भी भारत और भारतीय नेताओं के बारे में अनाप-शनाप और गैर-जिम्मेदाराना बयानबाजी करते रहते हैं। हालांकि गोवा में होने जा रहे शंघाई सहयोग संगठन के विदेश मंत्रियों के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए उनका आना उस लीक से हटकर है जब पाकिस्तान ऐसी बैठकों में अपनी भागीदारी वर्चुअल माध्यमों से करता आया है। इस वक्त उनकी सरकार राजनीतिक और आर्थिक रूप से बुरी तरह मुश्किल में है। अब देखना यह है कि क्या भारत दौरे पर बिलावल भुट्टो अपने मेजबान विदेशमंत्री एस. जयशंकर से मुलाकात की राजनयिक रिवायत निभाना चाहेंगे या नहीं। इधर, एस. जयशंकर ने जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पार करके आए घुसपैठियों द्वारा की जाने वाली आतंकी वारदातों पर हाल ही में भारत की चिंताएं दोहराई हैं। उम्मीद करें कि बिलावल भुट्टो ज़रदारी भारत से व्यवहार में, पिता आसिफ अली ज़रदारी, मां बेनज़ीर भुट्टो और नाना जुल्फिकार भुट्टो के नक्शे-कदम पर चलते हुए उनके संतुलित और प्रौढ़तापूर्ण व्यवहार का अनुसरण करेंगे।

लेखक पूर्व वरिष्ठ राजनयिक हैं।